फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

गुडईयर टायर. मजदूर अमरीका स्थित फैक्ट्री में 18-20 डालर प्रति घण्टा, 900-1000 रुपये एक घण्टा काम के लेता है। गुडईयर की फरीदाबाद फैक्ट्री में परमानेन्ट मजदूर का वेतन 58-62 रुपये प्रति घण्टा है और कैजुअल व ठेकेदार के जरिये रखे वरकर को एक घण्टा काम के 10 रुपये 50 पैसे गुडईयर कम्पनी देती है।

नई सीरीज नम्बर 174 दिसम्बर 2002

बदतर की सीमा नहीं (2)

पिछले अंक में शहर में जिन्दगी की एक झलक थी। प्रस्तुत हैं गाँव में जीवन के टुकड़े : ✱ लोग गुटों में बँटते जा रहे हैं। हमारे पास बैठते हो तो उनके पास मत बैठो। ✱ छोटी- छोटी बातों पर आपा खो देते हैं। इक्ट्ठे बैठना कम होता जा रहा है। हुक्का पीने वाले भी अपना- अपना हुक्का भर कर अपने- अपने घर के अन्दर बैठने लगे हैं। ✱ कोई क्या- क्या करे? अपना ही काम पूरा नहीं होता, भाईबन्दों की मदद कैसे करें? काम का बोझ बहुत ही ज्यादा बढ गया है और खुराक मिलती नहीं। जवानी में ही हड्डियाँ निकलने लगी हैं। ✱ आदमियों पर भरोसा घटता जा रहा है। लेन- देन का काम औरतों के सिर पड़ता जा रहा है। आदमी शराब और जुअे के फेर में पड़ रहे हैं जबकि घर के ख़र्चे के लिये औरतों के हाथ तंग- दर- तंग हैं। पति- पत्नी के बीच तनाव- झगड़े बढ रहे हैं। ✱ पहले युवा औरतें ज्यादा आत्महत्या करती थी। अब जवान आदमी अधिक आत्महत्या करने लगे हैं। पुलिस में रिपोर्ट ना के बराबर होती हैं। सब मिल कर दाहसंस्कार कर देते हैं — थाने जाना तो एक और आत्महत्या करवाना है। ✱ खेतीबाड़ी- दस्तकारी से गुजारा नहीं चल पा रहा। नौकरियाँ मिलती नहीं। दुकानें बहुत खुल गई हैं, खुलती जा रही हैं। लोग पगला रहे हैं — जिस किसी से कहते हैं कि कहीं चिपकवा दो। ✱ लफण्डरी बढ रही है। दिन ढले बाद इस डर से घर से नहीं निकलते कि रास्ते में कोई शराबी पता नहीं क्या कह दे और उलझ जाये। ✱ कर्ज में धँसते जा रहे हैं। नाते- रिश्तेदारों को शर्माशर्मी पैसे उधार दे भी देते हैं तो वापस कम ही मिलते हैं। खेत बन्धक धरा गया तो छूटता मुश्किल ही है, बिक जाता है। ✱ ढोंग बढ रहा है। अन्धविश्वास जोर मार रहा है। कंठी- माला डाल लेते हैं। पन्थों की शरण लेने लगे हैं। जो जिस पन्थ को अपनाते हैं वे उसे सर्वश्रेष्ठ तथा अन्यों को पाखण्डी कहते हैं। ✱ बुजुर्गों के अनुभवों को नौजवान "भौंकना" कहते हैं..... बड़े- बूढे सच नहीं बोलते, अपने समय को झूठमूठ ही बहुत बढिया बताते हैं। ✱ इकलौते पुत्र भी माँ- बाप से न्यारे हो रहे हैं। वृद्धावस्था में पति- पत्नी अलग रहने लगे हैं — माँ एक बेटे के साथ, पिता दूसरे बेटे के साथ। वृद्ध पति- पत्नी में बातचीत भी बन्द हो जाती है — कहते हैं कि बहुत दिन निभाया, अब और नहीं। ✱ रास्ते में भैंस बाँध कर सब के लिये परेशानी पैदा करने वाले को कोई टोकता नहीं। दूसरा नहीं कहता तो तू क्यों कहे? रास्ता बदल लेंगे। दुख पा लेंगे। ✱ मरने वाले के गुण ही गुण गाते हैं। तथ्यगत बात नहीं करते। हादसे के समय सब की हमदर्दी उमड़ आती है। सामान्य स्थिति में बेरुखी रहती है। ✱ लोग विचित्र होते जा रहे हैं। अपना भला चाहे न हो, दूसरे का बुरा होना चाहिए। दूसरे की चुगली, दूसरे की कमी निकालने की महामारी फैल रही है। ✱ लोग इतने कमजोर हो गये हैं कि अपनी बात हर एक से छिपाते हैं। गाँव में बहुत से लोग तो इसलिये वोट डालने जाते हैं ताकि उम्मीदवारों के समर्थकों को कह सकें कि तुम्हारे नेता को वोट दिया है। दस- दस के आगे झूठ बोल कर उनके ही समर्थन की बात करते हैं। ✱ साँझी चीजों पर निजी कब्जे बढते जा रहे हैं। सार्वजनिक हित भाड़ में जायें, निजी हित सर्वोपरि हो रहे हैं। ✱ अब ज्यादा तो भाषा में ही मार देते हैं। बहुत भद्दे ढँग से बात करना बढता जा रहा है।

शहर में जिन्दगी और गाँव में जीवन हमशक्ल हैं, एक-दूसरे की हूबहू नकल हैं।

उपरोक्त में भी तन की तकलीफें और मन की पीड़ायें झलकती हैं।

राहत के लिये मेहनत वाला किसानी- दस्तकारी नुस्खा स्वयं एक बीमारी बन गया है। एक की जगह दो- तीन- चार फसलें; गाँवों में काम में ढील के वक्त दस्तकारों- मजदूरों का शहरों में जा कर खटना; दूध बेचने के लिये गाय- भैंस पालना; मुर्गी- मछली पालन; बीज- दवाई- खाद- बिनौले- खल खरीदने, मोटर- पँखे ठीक करवाने और अनाज- सब्जी- अण्डे- दूध- घी बेचने मण्डी के रोज- रोज के चक्कर; छोटी- सी दुकान भी खोल लेना; ..... जस- तस टिके रहने में प्रयासरत लोगों के तन हर समय तने रहने लगे हैं। और.... और चौपट होती जा रही बढती सँख्या को खाली- ठाली अनन्त समय काट खा रहा है। कहाँ जायें? क्या करें? बेरोजगारों की बढती फौज को "मेहनत नहीं करते, मेहनत करो" कहना उनके कानों में पिघला सीसा डालना है।

समय का, फुरसत का गायब होते जाना.... समय का, फुरसत का बोझ बन जाना, दोनों ही मन को तड़फाना लिये हैं। मन के चैन के लिये पन्थों की शरण मृगमरीचिका है। सिर- माथों पर बैठों के एक विद्वान दार्शनिक ने ही सौ- सवा सौ वर्ष पहले कह दिया था: "गॉड इज डेड्— ईश्वर की मृत्यु हो गई है।" यह सच है कि विज्ञान की खोजों, तकनीकी साधनों और मैनेजमेन्ट रिसर्च पर रहस्यमयी आडम्बर की परतें डाल कर मृत प्रभु के अवतारों द्वारा भीड़ जमा करना अब भी जारी है। परन्तु नेताओं की ही तरह, सब मार्केटिंग तकनीकों के प्रयोग के बावजूद पन्थों- गुरुओं के दायरे एवं प्रभाव सिमट रहे हैं। मन को बीन्धे- बाँधे रखने के लिये सिर- माथों पर बैठों के प्रमुख आधुनिक ताने- बाने हैं: उपभोग की हवस को हवा देना और डिग्रीधारी मनोचिकित्सकों की फौज बढाना। उपभोग की हवस और डिग्रीधारियों का पाखण्ड पीड़ितों को ही दोषी ठहराने में भगवानों से भी इक्कीस तो हैं ही, बहुत अधिक घातक भी हैं।

रही सहजता- सादगी की बात, होड़- प्रतियोगिता- कम्पीटीशन सहजता- सादगी को लील रहे हैं।

फिर वही सवाल — क्या करें?

वर्तमान में व्यक्ति इस कदर चक्रव्यूहों में घिरी- घिरा है कि हर एक को अनगिनत समझौते करने पड़ते हैं। प्रतिदिन हम ऐसी- ऐसी हरकतें बरदाश्त करते हैं कि मन लहुलुहान हो जाता है। हर रोज हम स्वयं ऐसे- ऐसे करम करते हैं कि कह नहीं सकते। इन्हें मजबूरियों के आवरण में लपेट कर हम अपने मन को तसल्ली देते हैं। मजबूरी वास्तविक थी अथवा ओढी हुई, यह करना था अथवा वह नहीं सहना था के द्वन्द्व हमारे अन्दर चलते रहते हैं, हमें मथते रहते हैं।

बाहर बेशक हम कितने ही तीसमारखाँ होने के दावे करें, यह अक्सर होता है कि हर समय हम स्वयं को असहाय पाते हैं। आमतौर पर व्यक्ति का यह खुद को सही- सही जानना है, स्वयं के असहाय होने का अहसास है कि व्यक्ति खुद की नजरों में गिरती- गिरता है। स्वयं को हेय दृष्टि से देखना, (बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

... खतों से -पत्रों से...

★ हो गई जब भी पूरी सजा , चल दिये,
आ गई जब हमारी कज़ा , चल दिये
सांस की फैक्ट्री के हैं मजदूर हम
मौत का सायरन जब बजा , चल दिये
— सूर्य कुमार , लखनऊ

★.... मैंने एक मजदूर यूनियन में नौकरी पकड़ ली.... यूनियन के अन्दर मैंने जो पाया उसके लिये मैं तैयार नहीं थी पर अब मैं कुछ समझने लगी हूँ ..... मैंने नौकरी इसलिये ली ताकि पढाई के वास्ते अमरीका सरकार से लिया कर्ज लौटा दूँ तथा कुछ डालर बचा कर भारत वापस आ सकूँ.....

इस समय मैं कपड़ा मजदूर यूनियन के एक संगठनकर्ता का काम कर रही हूँ। यहाँ भी लगभग हर समय मैं यात्रा पर रहती हूँ। हम होटलों में रहते हैं और एक नगर से दूसरे नगर जाते कार में बहुत समय व्यतीत करते हैं।.... एक संस्था , एक संगठन के तौर पर यूनियन गहरे अन्तरविरोधों से भरी है , पूरी भरी है। एक तरफ यह अक्सर मजदूरों द्वारा अपनी मानवीयता तथा सामाजिक शक्ति को अभिव्यक्त करने का स्वयंस्फूर्त एवं सोचा- समझा वाहन है — मैंने इसे देखा है और वे क्षण वास्तव में आश्चर्यजनक तथा सुन्दर होते हैं। और यूनियन की उपस्थिति उन क्षणों को सच ही उकसाती है। और फिर यूनियन की नियमित जोड़तोड़ कब्जा कर लेती है। यूनियन मूलतः एक धन्धे की तरह है। (हम, जो कि यूनियन के वेतनभोगी कर्मचारी हैं , अपने मैनेजरों से निपटने के लिए हमारी अपनी अलग से यूनियन है !) वास्तव में यह अहसास होता है कि बुनियादी तौर पर यूनियन का नेतृत्व तथा संगठनात्मक ढाँचा/ लक्ष्य इस घातक पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों की शिरकत का प्रबन्ध करना है। मजदूरों की मानवीयता को साकार करने के लिये स्थान प्रदत करने अथवा दीर्घकालीन रिश्ते बनाने और बाद में कभी हमारी सामाजिक शक्ति को अभिव्यक्त करने का भरोसा पैदा करने से यूनियन का कोई सम्बन्ध नहीं है। मेरे कई सहकर्मी , यूनियन के अन्य वेतनभोगी संगठनकर्ता, मजदूर थे जिन्होंने फैक्ट्रियों से निकल कर यह नौकरी ली। यह साथी सर्वाधिक स्पष्टता से यूनियन के दिवालियेपन को व्यक्त करते हैं। परन्तु जो अधिक तकलीफदायक है वह है इन में से कई साथियों द्वारा सोचे- समझे सामुहिक जीवन में विश्वास करना बन्द कर देना। जहाँ कर सकते हैं वहाँ लोग प्रतिरोध करते हैं और लड़ते हैं। यूनियन हम से 24 घण्टे काम करने की उम्मीद करती है और जिन मजदूरों से हमारा वास्ता रहता है उन से यूनियन शतरंज के मोहरों की तरह व्यवहार करती है — जहाँ कर सकते हैं वहाँ इनके खिलाफ हम लोग जूझते व मुकाबला करते हैं और छोटे दायरों में जितना हो सकता है उतने इन्सान रहने की कोशिश करते हैं। लेकिन हमें धकेलती , पीठ पर लदी डरावनी यूनियन मशीन के दृष्टिगत हमारे विरोध व मुकाबले ऊबड़- खाबड़ हैं तथा हर समय नहीं हो पाते।....

—मनीषा, शिकागो , अमरीका

★.... मैंने एन.आई.आई.टी. कम्प्युटर सेन्टर , गोहाना में दाखिला लिया था। सारी फीस समय पर चुका दी थी लेकिन कोर्स समाप्त होने से पहले ही सेन्टर बन्द कर दिया गया। सेन्टर मालिक से हम छात्रों ने बात की तो उन्होंने कहा कि **N.I.I.T.** हेड आफिस से बात करो, वही तुम्हारा फैसला करेंगे। लेकिन एन.आई.आई.टी. हेड आफिस को शिकायत करने पर भी कुछ हासिल नहीं हुआ।.... —विनोद , गोहाना , सोनीपत

★ रायपुर रेलवे स्टेशन के 176 कुली 2 जुलाई से हड़ताल पर हैं। कुलियों की माँग है कि उन्हें रेलवे कर्मचारी घोषित किया जाये, नौकरी स्थाई की जाये , छँटनी बन्द की जाये तथा नई शर्तें नहीं लादी जायें। रेलवे के अन्य कर्मचारियों द्वारा समर्थन नहीं दिये जाने के कारण कुली अलग- थलग पड़े हैं। इधर मामला हाई कोर्ट में भी विचारा- धीन होने के बहाने नेताओं ने चुप्पी साध ली है परन्तु कुली डटे हैं। राजनेताओं ने अपना दामन छुड़ा लिया है और अब मुँह दिखाने भी नहीं आते। —राजीव कुमार , रायपुर

तनखा नहीं दी! क्या करें?

•**आटोपिन्स** मथुरा रोड़ प्लान्ट में सितम्बर व अक्टूबर की तनखायें 20 नवम्बर तक नहीं; •**इन्जेक्टो लिमिटेड** में अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें 21 नवम्बर तक नहीं ; •**ब्रॉन लेबोरेट्री** में अक्टूबर की तनखा 18 नवम्बर तक नहीं; •**क्लच आटो** में अक्टूबर का वेतन 16 नवम्बर तक नहीं ; •**फर आटो** में 7 महीनों की तनखायें बकाया ; •**नूकेम मशीन टूल्स** में 13 महीनों की तनखायें नहीं दी हैं; •**झालानी टूल्स** में 52 महीनों के वेतन बकाया ; •**भोगल्स शूज** में सितम्बर की तनखा 31 अक्टूबर को और अक्टूबर का वेतन 14 नवम्बर तक नहीं ; •.....

37 – 40 दिन काम करवाने के बाद 30 दिन का वेतन देने का कानून बना कर मजदूरों से जबरन उधार तो लेते ही हैं, सिर-माथों पर बैठे अपने इस कानून का भी पालन नहीं करते। इस सब के खिलाफ मजदूर क्या-क्या कर सकते हैं ? इसके बारे में 'मजदूर समाचार' के जरिये भी अपनी बातें कह कर, चर्चाओं को बढायें।

बदतर की सीमा नहीं...

(पेज एक का शेष)

व्यक्ति का खुद के लिये आदर नहीं होना आज बहुत व्यापक है तथा बढता जा रहा है। और , यह स्वयं के लिये आदर का अभाव है जो दूसरों के लिये अनादर के रूप में भी अभिव्यक्त होता है।

चूँकि कम- बेशी प्रत्येक के संग ऐसी स्थितियाँ हैं, इसलिये जिनसे हमारा निकट से वास्ता पड़ता है , जिन्हें हम ज्यादा जानते हैं उनके प्रति खुला अथवा छिपा अनादर बहुत अधिक होता है। जो ज्यादा दूर हैं , जिनसे कभी- कभार वास्ता पड़ता है , जिन्हें बहुत कम जानते हैं उनके प्रति आदर का भाव पैदा करना निकट वालों की तुलना में आसान लगता है।

पीड़ित द्वारा अपने अन्तर्मन में स्वयं को दोषी ठहराना , अन्य पीड़ितों को दोषी करार देना बहुत ही घातक है। यह हमारा चक्रव्यूहों में फँसे रहना सुनिश्चित करता है। आसपासवालों में एक-दूसरे के प्रति अनादर का होना , एक-दूसरे को हेय दृष्टि से देखना आसपासवालों के बीच तालमेलों में प्रमुख रुकावटों में है। और , आसपासवालों के बीच तालमेल प्रस्थान-बिन्दू हैं चक्रव्यूहों की काट के।

हम जूझते हैं , यह स्वयं में आदर के लिये आधार नहीं है क्या ? सत्य , प्रेम , आदर के लिये मचलते मन आदर के लिये पर्याप्त नहीं हैं क्या? बात दूसरों की हरकतों, अपने करमों को अनदेखा करने की नहीं है। बल्कि , अपने को - दूसरों को कोसते रहने की बजाय सवाल ऐसे कदम उठाने का है जो मजबूरियों से घिरे लोग सहज उठा सकें। वर्तमान समाज व्यवस्था में व्यक्ति की असहायता का अहसास नई समाज रचना के लिये प्रयासों का पुख्ता आधार है। (जारी)■

ओछी हैं कम्पनियाँ..व्हर्लपूल

(पेज चार का शेष)

लोगों को साथ ले कर हम पर दिन- दहाड़े हमला किया। थाने में हम ने शिकायतें की, फिर कोई कार्रवाई नहीं। हम ने डी.सी. को शिकायतें की। डी. सी. के तफ्तीश करने के पत्र पर पुलिस ने खोकेवाले और पटरीवाले से हस्ताक्षर करवा कर भेज दिया कि 28 अक्टूबर की घटना हुई ही नहीं !

" कम्पनी ने हमारे खिलाफ अदालत की अवमानना का केस भी कर दिया है और हमारे धरने के खिलाफ फिर स्टे माँगा है। बीस नवम्बर की तारीख पड़ी है।

"अदालत ने हमारे धरने के खिलाफ स्टे खारिज करते समय पाबन्दी लगाई कि फ्रीजर विभाग को बन्द कर व्हर्लपूल कम्पनी ने हाल ही में जिन 186 मजदूरों को जबरन नौकरी से निकाला है उनके धरने में हम शामिल नहीं होंगे , उनसे तालमेल नहीं रखेंगे। इसलिये हम अलग से बैठे हैं। **यह तो फैक्ट्री में कार्य कर रहे मजदूरों का सहयोग है जिसकी बदौलत हम व्हर्लपूल कम्पनी की ओछी हरकतों से निपट पा रहे हैं और डटे हुये हैं। लन्च ब्रेक में , शिफ्ट छूटने पर व्हर्लपूल मजदूर यहाँ आ कर हम से मिलते हैं और मदद कर रहे हैं।"■**

कुछ फुरसत में

नूकेम केमिकल डिविजन मजदूर : " 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में प्लास्टिक का पाउडर बनता है। फैक्ट्री में जब इन्सपैक्टर आते हैं तभी कम्पनी हमें मास्क देती है और फिर तुरन्त वापस ले लेती है। आमतौर पर हमें मुँह पर कपड़ा बाँध कर काम करना पड़ता है। पाउडर से इतना बुरा हाल हो जाता है कि आदमी पहचाना नहीं जा सकता। हमारे फेफड़े खराब हो जाते हैं, साँस की बहुत तकलीफें हैं।

" फैक्ट्री चौबिसों घण्टे, सातों दिन चलती है। पहले यहाँ 500 मजदूर काम करते थे। जबरन निकाल- निकाल कर अब 250- 300 वरकर रह जाने पर भी कम्पनी का निकालने का चक्कर रुका नहीं है। एक आदमी को चार- चार काम बता देते हैं और नहीं होने पर निलम्बित कर देते हैं। हर विभाग में काम का बोझ बहुत बढा रखा है। एक ट्राली में 700- 800 किलो माल भरवा देते हैं -- फिसलने पर हाथ- पैर टूट जाते हैं तब कम्पनी कहती है कि जानबूझ कर एक्सीडेन्ट किया। सैक्शनों में सुपरवाइजर धमकाते हैं। परसनल मैनेजर तो बगैर गाली के बात नहीं करता।

" 'पैसे नहीं हैं' कहना नूकेम कम्पनी का तकिया कलाम बना हुआ है। अक्टूबर का वेतन आज 15 नवम्बर तक नहीं दिया है। दिवाली पर बोनस नहीं दिया। जनवरी में देय वर्दी- जूते अब तक नहीं दिये हैं। एक मजदूर को रिटायर हुये 6 महीने और दूसरे को 4 महीने हो गये हैं -- हिसाब नहीं दिया है। 15- 20- 25 वर्ष की नौकरी पर साइकिल- अलमारी- विक्की 'उपहार' में हैं लेकिन 'पैसे नहीं हैं' कह कर पिछले साल की तथा इस साल की अटका रखी हैं।

" वेलफेयर सोसाइटी के हमारे वेतन में से 50 रुपये हर महीने कटते हैं। इस समय सोसाइटी खाते में 15 लाख रुपये से ज्यादा हैं। इन पैसों को कम्पनी ने अपने नियन्त्रण में ले रखा है और कम्पनी के काम में लगा रखा है। हम अपने ही पैसों में से कर्ज माँगते हैं तब 'पैसे नहीं हैं' कह कर लटका देते हैं। जरूरत के वक्त हमें पैसे देने की बजाय कह देते हैं कि परसनल मैनेजर ने चेक नहीं दिया।

"विरोध को दबाने के लिए 28 अक्टूबर से कम्पनी ने 6 वरकरों को सस्पेण्ड किया हुआ है। निलम्बित मजदूर को हर रोज 11 बजे फैक्ट्री गेट पर हाजरी लगवानी पड़ती है। नूकेम कम्पनी ने अपने घर का कानून बना रखा है कि निलम्बन भत्ता नहीं देगी-- धमकी है कि कोर्ट में जाओगे तो पत्ता साफ कर देगी।"

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज वरकर : " थर्मल पावर हाउस की बगल में स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात साढे आठ तथा रात 8 से सुबह साढे आठ बजे तक की साढे बारह- साढे बारह घण्टे की दो शिफ्ट हैं। और, सुबह 8 बजे शुरू होती शिफ्ट के लिये भी हमें पौने आठ बजे फैक्ट्री के अन्दर पहुँचना पड़ता है क्योंकि परसनल मैनेजर उस समय रोज भाषण देता है। दोपहर लन्च के समय भी भाषण : 'काम में तेजी लाओ, रिजेक्शन कम करो'। इधर मैनेजिंग डायरेक्टर ने मीटिंग ली और कहा कि रिजेक्शन बढ रहा है, मारुति को पार्ट्स सप्लाई करने वालों में सबसे अधिक रिजेक्शन वालों में कम्पनी हो गई है। बड़े साहब ने वीडियो कैमरे से फैक्ट्री में फिल्म बनानी शुरू की है। अब रोज परसनल मैनेजर वीडियो का हवाला दे कर रिजेक्शन कम करने के तरीके बताता है।

" कारीगरों को वी जी कम्पनी हैल्परों का ग्रेड देती है, 2134 रुपये महीना। ई.एस. आई. और पी.एफ. के 294 रुपये काट लेते हैं। चार घण्टे रोज ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और वह भी 1840 रुपये तनखा के हिसाब से। हैल्परों को 1700 रुपये महीना तनखा देते हैं।

" वी जी फैक्ट्री में 600 के करीब मजदूर हैं जिनमें से लगभग सौ कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और 500 वरकरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है। साढे बारह घण्टे की ड्युटी में कम्पनी किसी भी मजदूर को एक कप चाय तक नहीं देती। काम के लिये बहुत दबाव डालते हैं, हर समय सिर पर खड़े रहते हैं और परसनल मैनेजर तो गालियाँ भी देता है। एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, चोटें बहुत लगती हैं, उँगली- हाथ कट जाते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं और एक्सीडेन्ट होने पर वी.जी. मैनेजमेन्ट 5 नम्बर में एक नर्सिंग होम भेज देती है। हद तो यह कर रखी है कि चोट लगी होने पर भी काम करने को कहते हैं और ज्यादा चोट लगी होती है तब भी फैक्ट्री में रहने पर जोर देते हैं -- नहीं रुको और आराम करने कमरे पर चले जाओ तो उस दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं।" ■

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद--121001

खप्पर भरता नहीं

व्हर्लपूल और टेकमसेह मजदूर : "संकट- मुनाफा- होड़ की त्रिवेदी पर मजदूरों की बलि का कोई अन्त नहीं है। फरीदाबाद में केल्विनेटर की फैक्ट्रियाँ लेते ही व्हर्लपूल ने 1995 में 2200 परमानेन्ट मजदूरों की छँटनी की थी और मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौते द्वारा वर्क लोड में भारी वृद्धि की थी। सहयोगी टेकमसेह को 1997 में कम्प्रेसर डिविजन ट्रान्सफर कर व्हर्लपूल मात्र डिब्बे बनाने लगी है।

" व्हर्लपूल के संग जुगलबन्दी करती टेकमसेह ने मैनेजमेन्ट- यूनियन एग्रीमेन्ट द्वारा 1999 में फिर वर्क लोड में वृद्धि की। और, तालाबन्दी तथा सरकार से विभागों को बन्द करने की अनुमति और वी.आर.एस. के बाण चला कर टेकमसेह कम्पनी ने सन् 2000 में 600 मजदूरों की छँटनी की। मैनेजमेन्ट के सब हथकन्डों के बावजूद बन्द विभागों के जिन मजदूरों ने इस्तीफे नहीं दिये उन्हें हैदराबाद ट्रान्सफर करना पड़ा। भेजे गये मजदूरों की अधिक तनखा ने टेकमसेह की हैदराबाद फैक्ट्री मजदूरों में हलचल पैदा की। यह झूठ है कि ट्रान्सफर के बाद उन मजदूरों को निकाल दिया गया, उनमें से तीन- चौथाई आज भी हैदराबाद फैक्ट्री में नौकरी कर रहे हैं।

" 2001 में व्हर्लपूल ने प्लास्टिक डिविजन के 146 मजदूरों को जबरन नौकरी से निकाला और फैक्ट्रियाँ ब्राइट ब्रॉदर्स को दे दी। इस साल के आरम्भ में हुये मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौते में फिर काम के बोझे में भारी बढोतरी की गई। सरकार से अनुमति ले ली है कह कर व्हर्लपूल ने अगस्त में फ्रीजर विभाग के 186 मजदूरों को जबरन फैक्ट्री के बाहर कर दिया।

" 25 नवम्बर से कम्पनी ने फिर वी.आर.एस. लगाई है। स्वेच्छा तो कहने भर को है, इस्तीफों के लिये कम्पनी भारी जोरजबरदस्ती कर रही है। मैनेजमेन्ट कई मजदूरों को खाली बैठा रही है ; एक मजदूर से दो का काम करने को कह रही है ; लाइन को 5 मिनट भी बन्द नहीं कर रही ; पानी-पेशाब के लिये रिलिवर नहीं दे रही ; पानी-पेशाब के लिये जगह से हटने पर रिपोर्ट करने की हिदायत सुपरवाइजरों को दे रखी है। परसनल मैनेजर और प्रोडक्शन मैनेजर दनदनाते फिर रहे हैं। सुपरवाइजरों से रिपोर्ट लिखवा कर मजदूर से कहते हैं कि वी.आर. एस. का फार्म भर या बरखास्तगी पत्र ले। स्टोर वाले वरकरों को साहबों ने कहा है कि वी.आर.एस. फार्म भरो या फिर पूना-पाँडिचेरी-गुवाहाटी जाओ। महिला मजदूरों से सुबह 6 बजे की शिफ्ट में ड्युटी पर आने तथा लाइन पर काम करने अथवा वी.आर.एस. का फार्म भरने में चुनने को कहा है। दृष्टिहीन मजदूरों का गेट रोका : शिफ्टों में ड्युटी करो या वी.आर.एस. फार्म भरो। इस जोरजबरदस्ती पर नौकरी छोड़ने को मजबूर चार अन्धे मजदूर रोते हुये फैक्ट्री से निकले। दबाव के लिये व्हर्लपूल कम्पनी पहले वाली सब हदें पार कर रही है क्योंकि नौकरी से निकले सहकर्मियों तथा अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों की दुर्गत को देख व्हर्लपूल मजदूर अब अफवाहों और लालच के झाँसे में नहीं आ रहे। ऐसे में 30 नवम्बर को आखिरी दिन कह चुकी कम्पनी वी.आर.एस. की तारीख को बढाती जा रही है।

"कम्पनी पर लगाम लगाने के लिये हमने यूनियन की तरफ देखा पर यूनियन ने हाथ उठा दिये, लीडर कहते हैं कि कुछ नहीं कर सकते। संकट- मुनाफा- होड़ में अन्धी कम्पनी के नकेल डालने का काम हम मजदूरों को खुद करना होगा। इसके बारे में सोचने- समझने की जरूरत है।" ■

मैनेजर की जुबानी

ई-पैक पोलीमर मैनेजर : " ग्रेटर नोएडा में एल- जी कम्पनी की बगल में स्थित ई- पैक पोलीमर में थर्मोकोल पैकेजिंग का उत्पादन होता है और 90 प्रतिशत माल की सप्लाई एल- जी को होती है। यह फैक्ट्री 2001 में शुरू हुई है और भविष्य की अच्छी सम्भावनायें देख कर मैं इसमें मैनेजर लगा।

" पहले दिन ड्युटी करने के बाद फैक्ट्री गेट पर मुझे टोका गया। छुट्टी की इजाजत का पत्र माँगने पर यह कह कर कि मैनेजर हूँ, मैं बाहर आ गया। दूसरे दिन भी ऐसा ही होने पर मैं अनसुना कर चला आया। तीसरे दिन गेट पर रोक कर मुझे बताया गया कि इजाजत के बिना बाहर नहीं जा सकते और अनुमति देने के लिये तीन लोग अधिकृत हैं। तीन में एक मुझ से जूनियर था और एक समकक्ष -- गुस्से में मैं जनरल मैनेजर के पास गया तो उन्होंने मामले को ठण्डा करते हुये कहा कि फरीदाबाद से आते हो इसलिए 8 घण्टे की ड्युटी के बाद जा सकते हो। हफ्ते- भर बाद गेट पर मैनेजिंग डायरेक्टर मिला और बोला कि नोएडा में कमरा ले लो।

" फैक्ट्री में 250 मजदूर और 30- 35 स्टाफ कार्यरत हैं। फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं -- वरकर, स्टाफ, मैनेजर, सब के लिये 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी अनिवार्य है। भर्ती के समय जो वेतन बताते हैं वह 8 घण्टे की बजाय 12 घण्टे प्रतिदिन की ड्युटी का होता है! मैंने किराये पर कमरा भी ले लिया था -- फँस गया हूँ सोच कर दूसरा जुगाड़ होने तक निभाने की सोची।

" फैक्ट्री में प्रतिदिन सुबह विभाग प्रमुखों की मीटिंग होती। ई- टीम पिछले दिन की लागत/रिजेक्शन के आँकड़े प्रस्तुत करती। यह टीम मैनेजिंग डायरेक्टर ने अपने चमचों से गठित की है और भोंपू का काम करती है। जिस दिन झाड़ना हो, ई- टीम को लागत/रिजेक्शन ज्यादा दिखाने को बोल दो। बड़े साहब के पास समय नहीं है, तुरन्त नतीजे चाहियें। उन्हें हथेली पर सरसों उगा कर दो -- आदमी हैं तो उत्पादन दो, नये आदमी हैं तो उत्पादन दो, आदमी नहीं हैं तो उत्पादन दो!

" शाम को 4 बजे फिर विभाग प्रमुखों की मीटिंग। ई-टीम द्वारा फिर हेर-फेर कर आँकड़े प्रस्तुत। फिर मैनेजिंग डायरेक्टर का भाषण : उत्पादन की लागत घटाओ ; काम में कोई रुचि नहीं ले रहा ; उत्पादन की लागत बढ रही है - क्वालिटी घट रही है ; सफाई का ध्यान नहीं है .... रोज 15- 20 मिनट भाषण।

" 12 घण्टे की ड्युटी का पता चलने पर कई लोग नौकरी छोड़ना चाहते हैं पर बड़े साहब इस्तीफा स्वीकार नहीं करते, कहते हैं : यह कोई धर्मशाला है जो जब चाहा ज्वाइन कर लिया, जब चाहा छोड़ दिया। अपना नियम बना रखा है कि महीने से पहले नौकरी से निकालने अथवा इस्तीफा देने पर काम किये दिनों का वेतन नहीं।

" एक सुपरवाइजर ने मुझ से इस्तीफा स्वीकार करने का अनुरोध किया। मैंने जनरल मैनेजर और मैनेजिंग डायरेक्टर से बात की। नये का प्रबन्ध मुझे करना होगा कह कर उन्होंने फैसला मुझ पर छोड़ दिया। नये सुपरवाइजर की भर्ती तक स्वयं एक शिफ्ट देखने का तय कर मैंने इस्तीफा स्वीकार कर लिया और अखबारों में नई भर्ती के लिये इश्तिहार की प्रक्रिया शुरू कर दी। तीन दिन बाद दूसरे सुपरवाइजर के पिताजी की गम्भीर स्थिति और तुरन्त घर आने का फोन आया। हालात के दृष्टिगत मैंने उसे छुट्टी दे दी। मैनेजिंग डायरेक्टर को पता चला तो वह बहुत बिगड़ा। मैंने इस्तीफा दे दिया और उसने स्वीकार कर लिया।

" ई- पैक पोलीमर में काम करते मुझे महीना पूरा नहीं हुआ था। किये काम के पैसे माँगने पर अकाउँट वालों ने मुझे महीना पूरा नहीं होने पर वेतन नहीं वाला मनमर्जी का नियम बताया। मैं मैनेजिंग डायरेक्टर से मिला तो वह उल्टे यह बोला कि छुट्टी दे कर मैंने 4 लाख रुपये के उत्पादन का नुकसान कर दिया। वेतन के 15 हजार और ओवर टाइम के 15 हजार रुपयों के लिये मैंने कार्रवाई करने का निश्चय किया है।" ■

रफ्तार जानलेवा है

ओछी हैं कम्पनियाँ

व्हर्लपूल मजदूर : " प्लॉट 16- 17 सैक्टर- 24 और प्लॉट 1 सैक्टर- 25 स्थित व्हर्लपूल कम्पनी की प्लास्टिक डिविजन फैक्ट्रियों में कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकरों के अलावा 1995 की भारी छँटनी के बाद हम 146 परमानेन्ट मजदूर भी काम करते थे। 23.7.01 को हम परमानेन्टों को व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट ने ब्राइट ब्रॉदर्स में ट्रान्सफर के पत्र दिये और फैक्ट्री- प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी। यूनियन ने हाथ उठा दिये, लीडरों ने कहा कि कुछ नहीं कर सकते। तीन दिन हमें फैक्ट्रियों से बाहर रख कर व्हर्लपूल कम्पनी ने वी.आर.एस. लगाई और कहा कि इस्तीफे दो अथवा ब्राइट में जाओ। हताशा में 139 ने इस्तीफे लिख दिये पर 7 ने नहीं लिखे। हम 7 को फैक्ट्रियों में प्रवेश करने दिया, हम ड्युटी करने लगे। चौदह दिन बाद ब्राइट ब्रॉदर्स ने हम से शपथ- पत्र माँगा और हमारे इनकार पर हम 7 का फिर फैक्ट्रियों में प्रवेश रोक दिया गया। हम ने श्रम विभाग में शिकायतें की। मामला चण्डीगढ भेज दिया।

" मेरा (भागीरथ का) केस चण्डीगढ से 15.2.02 को रेफर हो कर यहाँ श्रम न्यायालय में आ गया है लेकिन बाकी 6 का रिजेक्ट कर दिया। जबकि, सुप्रीम कोर्ट के साफ- साफ आदेश हैं कि चण्डीगढ में साहब रिजेक्ट नहीं कर सकते, उन्हें मामले श्रम न्यायालय में भेजने चाहियें, फैसला श्रम न्यायालय करेगा। मेरे केस में श्रम न्यायालय में इस बीच 3 तारीख पड़ चुकी हैं परन्तु कम्पनी एक तारीख पर भी नहीं पहुँची है।

" कम्पनी के अन्याय के खिलाफ मैंने 24.5.02 को इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित व्हर्लपूल फैक्ट्री गेट पर धरना आरम्भ किया। इस पर कम्पनी ने अन्याय के साथ अत्याचार भी जोड़ दिया। मैनेजमेन्ट ने पुलिस बुला ली। मुझे पकड़ कर मुजेसर थाने ले गये और वहाँ थानेदार ने गालियाँ दी, धमकी दी कि व्हर्लपूल गेट पर दिखाई नहीं देना अन्यथा केस बना देंगे, वी. आर.एस. लो। आखिरकार, दो दिन में समझौता करा देगा कह कर थानेदार ने मुझे छोड़ा। और, मुझे भूल कर गौंछी गाँव में हुये कत्ल में थानेदार व्यस्त हो गया।

" व्हर्लपूल कम्पनी हम 7 के धरने के खिलाफ अदालत से स्टे ले आई। हमें 3 जून को समन मिला और 10 जून की तारीख थी। हम 3 ने वकील नहीं किया, स्वयं पेश हुये जबकि हम में से 4 ने वकील किया था। कोई बोली नहीं लगी, वकील चुपचाप तारीख ले गये और हम 3 को गैर- हाजिर दिखा दिया। चार बजे हम जज से मिले तब हमारी हाजरी लगी और हमें अगली तारीख बताई। हम ने हिन्दी में हाथ से लिख कर कम्पनी के दावे के खिलाफ अपना जवाब स्वयं बनाया और जज को दिया। जज ने कहा कि यह जवाब नहीं है, पाइन्ट टू पाइन्ट जवाब दो, और हमें वकील करने को कहा। हम ने वकील किया और 28 अगस्त को अदालत ने धरने के खिलाफ व्हर्लपूल कम्पनी की स्टे खारिज कर दी। हमें धरने पर बैठने को 8 फुट जगह दी है-- हम ने 8 गज सुना था। हम में से 4 के वकील ने लिख कर कोर्ट में दे दिया था कि उन्हें धरने से कोई मतलब नहीं है।

" अदालत द्वारा तय स्थान पर प्लास्टिक की पन्नी तान कर जोगिन्द्र और मैं, भागीरथ धरने पर बैठे। **व्हर्लपूल कम्पनी ने रात को हमारा प्लास्टिक का तम्बू फड़वा दिया। हम दूसरा ले आये। कम्पनी ने उसे रात को चुरा लिया। हम फिर प्लास्टिक की चद्दर लाये और उसे भी कम्पनी ने चुरा लिया। हम ने मुजेसर थाने में शिकायतें की परन्तु कम्पनी के खिलाफ कार्रवाई करने की बजाय थानेदार उल्टे हमें बोला की बाँस नहीं लगेगा।** ऐसे में अब हम रात के लिये अपना तम्बू दूसरी जगह रख कर जाते हैं।

" पुलिस चक्कर लगाती रहती है। हमारे पास हाथ वाला छोटा माइक था। डी एस पी बोला की माइक नहीं चलेगा और थानेदार ने उठा कर गाड़ी में रख लिया। बहुत कहने पर डी एस पी ने इस शर्त पर माइक वापस दिलाया कि इस्तेमाल नहीं करेंगे।

" उकसाने के लिये व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट ने हमारी वीडियो फिल्म बनवाई और ग्रुप फोर की सेक्युरिटी से सितम्बर में हम से धक्का- मुक्की करवाई। पुनः 28 अक्टूबर को कम्पनी अधिकारियों ने ग्रुप फोर के 15- 16

(बाकी पेज दो पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।